***दैनिक जीवन के लिए नीतिवचन* (*भाग-9*)**

ईश्वरीय सलाह पर नीतिवचन
रविवार, 22 मार्च 2026 – उपदेश की रूपरेखा

अब तक हमने देखा:
दैनिक जीवन के लिए नीतिवचन (भाग–1): बुद्धि पर नीतिवचन
दैनिक जीवन के लिए नीतिवचन (भाग–2): संबंधों पर नीतिवचन
दैनिक जीवन के लिए नीतिवचन (भाग–3): परिवार पर नीतिवचन
दैनिक जीवन के लिए नीतिवचन (भाग–4): पवित्रता और ईमानदारी पर नीतिवचन
दैनिक जीवन के लिए नीतिवचन (भाग–5): अनुशासन और आत्म-संयम पर नीतिवचन
दैनिक जीवन के लिए नीतिवचन (भाग–6): काम पर नीतिवचन
दैनिक जीवन के लिए नीतिवचन (भाग–7): नेतृत्व पर नीतिवचन
दैनिक जीवन के लिए नीतिवचन (भाग–8): समझदारी पर नीतिवचन

आज – इस श्रृंखला का अंतिम संदेश: ईश्वरीय सलाह पर नीतिवचन

ईश्वरीय (सही) सलाह का महत्व

नीतिवचन 11:14
जहाँ बुद्धि की युक्ति नहीं, वहाँ प्रजा विपत्ति में पड़ती है; परन्तु सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है।

नीतिवचन 15:22
बिना सम्मति की कल्पनाएँ निष्फल हुआ करती हैं, परन्तु बहुत से मंत्रियों की सम्मति से बात ठहरती है।

नीतिवचन 19:20
सम्मति को सुन ले, और शिक्षा को ग्रहण कर, कि तू अन्तकाल में बुद्धिमान ठहरे।

नीतिवचन 20:18
सब कल्पनाएँ सम्मति ही से स्थिर होती हैं; और युक्ति के साथ युद्ध करना चाहिये।

नीतिवचन 24:6
इसलिये जब तू युद्ध करे, तब युक्ति के साथ करना, विजय बहुत से मंत्रियों के द्वारा प्राप्त होती है।

सलाह प्राप्त करना

नीतिवचन 1:5
कि बुद्धिमान सुनकर अपनी विद्या बढ़ाए, और समझदार बुद्धि का उपदेश पाए,

नीतिवचन 12:15
मूढ़ को अपनी ही चाल सीधी जान पड़ती है, परन्तु जो सम्मति मानता, वह बुद्धिमान है।

सलाह देना

नीतिवचन 12:20
बुरी युक्ति करनेवालों के मन में छल रहता है, परन्तु मेल की युक्ति करनेवालों को आनन्द होता है।

जो लोग बुराई और हानि की योजना बनाते हैं, वे छल और धोखे से भरे हुए मन से कार्य करते हैं। उनका उद्देश्य दूसरों को धोखा देकर उन्हें नुकसान पहुँचाना होता है।

परन्तु जो परामर्श देने वाले (सलाहकार, योजनाकार, प्रभाव डालने वाले) लोगों के लिए शांति ("शलोम"), संपूर्णता और पूर्ण कुशलता चाहते हैं, वे जिनको सलाह देते हैं उनके लिए आनन्द का कारण बनते हैं।

जब हम लोगों को सलाह देते हैं, मार्गदर्शन करते हैं और उन्हें उनकी शांति (संपूर्णता, पूर्ण कुशलता) की ओर ले जाते हैं, तब हम उनके जीवन में स्थायी आनन्द ला सकते हैं।

और हम केवल उन्हें ही आनन्द नहीं देते—बल्कि जब हम दूसरों को "शलोम", अर्थात पूर्ण कुशलता का अनुभव करते हुए देखते हैं, तब हमें भी आनन्द प्राप्त होता है।

परामर्श के लिए बाइबिल आधारित दृष्टिकोण

नीतिवचन 20:5
मनुष्य के मन की युक्ति अथाह तो है, तौभी समझवाला मनुष्य उसको निकाल लेता है।

यह वचन अर्थ में बहुत समृद्ध है और लोगों के साथ कार्य करने (परामर्श देने) में हमारा मार्गदर्शन कर सकता है।

हिब्रू भाषा में इसे इस प्रकार समझा जा सकता है:
“मनुष्य के भीतर गहरे में सोच-समझकर बने विचार और उद्देश्य होते हैं, जो कुएँ के तल के जल के समान हैं; परन्तु समझदार व्यक्ति उन्हें धैर्यपूर्वक ऊपर लाना जानता है।”

मनुष्य के वास्तविक विचार और बुद्धि उसके भीतर गहराई में छिपे होते हैं, परन्तु सच्ची समझ रखने वाला व्यक्ति उन्हें बाहर लाने में सहायता करता है।

“मनुष्य के मन की युक्ति गहरे जल के समान है”
यहाँ “युक्ति” का अर्थ है—विचार, अभिप्राय, बुद्धि, प्रेरणाएँ, योजनाएँ या भीतर की तर्कशक्ति। हिब्रू शब्द गहराई से बने हुए आंतरिक विचारों और उद्देश्यों को दर्शाता है।

मनुष्य के भीतर के विचार गहरे जल के समान होते हैं—जो सतह के नीचे छिपे रहते हैं। हम तुरंत नहीं जान सकते कि कोई व्यक्ति वास्तव में क्या सोचता या महसूस करता है। लोग अपने भीतर अनकही बुद्धि, अनसुलझे संघर्ष, सपने या भय रखते हैं—और कभी-कभी परमेश्वर द्वारा दी गई समझ भी जिसे वे स्वयं पूरी तरह नहीं समझते। जैसे गहरे कुएँ में मूल्यवान जल होता है, वैसे ही मनुष्य के हृदय में भी मूल्यवान अंतर्दृष्टि होती है, परन्तु वह तुरंत दिखाई नहीं देती। लोग जितने दिखते हैं, उससे कहीं अधिक गहरे होते हैं।

“परन्तु समझदार मनुष्य उसे बाहर निकालता है”
समझदार व्यक्ति वह है जिसमें बुद्धि, विवेक, धैर्य, अच्छी सुनने की क्षमता और आत्मिक संवेदनशीलता होती है। यहाँ “समझ” का अर्थ है—भेद करना, पहचानना। “निकालना” उस प्रक्रिया को दर्शाता है जैसे कुएँ से जल निकालना—धीरे-धीरे और उद्देश्यपूर्ण ढंग से। हिब्रू शब्द यह संकेत देता है कि इसमें धैर्य, बार-बार प्रयास, कोमलता और सचेत सहभागिता शामिल है।

इसका अर्थ है कि ऐसा व्यक्ति सोच-समझकर प्रश्न पूछता है, ध्यान से सुनता है, सुरक्षित और भरोसेमंद वातावरण बनाता है, और दूसरों की मदद करता है कि वे अपने भीतर की बातों को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकें। वह छिपे हुए विचारों को स्पष्ट करने में सहायता करता है।

लोगों को अपने ही हृदय को समझने और यह जानने में सहायता की आवश्यकता होती है कि परमेश्वर उनके भीतर क्या कर रहा है। बहुत से लोग स्वयं को पूरी तरह नहीं समझते, अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में संघर्ष करते हैं, और अपने भीतर दबे हुए ज्ञान या पीड़ा को लेकर चलते हैं। समझदार नेता, परामर्शदाता, पास्टर या मित्र इन बातों को बाहर लाने और व्यक्ति को स्पष्टता देने में सहायता करते हैं।

यही एक अच्छे परामर्शदाता का कार्य है। अच्छे परामर्शदाता बोलने से अधिक सुनते हैं। वे उत्तर थोपते नहीं, बल्कि धैर्यपूर्वक धीरे-धीरे बातों को बाहर लाते हैं।

सच्चे मित्र की सलाह

नीतिवचन 27:9
जैसे तेल और सुगन्ध से, वैसे ही मित्र के हृदय की मनोहर सम्मति से मन आनन्दित होता है।

यह नीतिवचन शारीरिक सुगंध की तुलना संबंध और सलाह से करता है। बाइबल के समय में तेल और इत्र का उपयोग त्वचा को शांत करने के लिए किया जाता था और यह आनंद तथा पुनर्स्थापन का प्रतीक था। हम जानते हैं कि सुखद सुगंध तुरंत मन (पूरे अस्तित्व, मानव आत्मा) को प्रसन्न कर देती है।

हृदय से दी गई सलाह का अर्थ है—विचारपूर्ण परामर्श, बुद्धिमान मार्गदर्शन और उद्देश्यपूर्ण अंतर्दृष्टि। यह सतही सलाह या केवल सहमति नहीं है, बल्कि ऐसी सलाह है जो सच्चे मन की गहराई से निकलती है।

जैसे सुगंध शरीर को तुरंत ताज़गी देती है, वैसे ही गहरी मित्रता सच्चे हृदय से 3.दी गई सलाह के द्वारा दूसरे के मन को ताज़गी और नवजीवन देती है।

जिन सलाहों से बचना चाहिए

नीतिवचन 12:5
धर्मियों की कल्पनाएँ न्याय ही की होती हैं, परन्तु दुष्टों की युक्तियाँ छल की हैं।

परमेश्वर की सलाह

नीतिवचन 3:32
क्योंकि यहोवा कुटिल से घृणा करता है, परन्तु वह अपना भेद सीधे लोगों पर खोलता है ।

परमेश्वर अपनी सलाह उन लोगों के साथ साझा करता है जो उसके सामने सीधाई से चलते हैं।

नीतिवचन 19:21
मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाएँ होती हैं, परन्तु जो युक्ति यहोवा करता है, वही स्थिर रहती है।

हमारी इच्छा यह है कि हम परमेश्वर की सलाह को प्राप्त करें। उसकी सलाह हमें उसके वचन के द्वारा, उसके आत्मा के द्वारा, और यहाँ तक कि उन ईश्वरीय लोगों के द्वारा भी मिल सकती है जिन्हें वह हमारे जीवन में बोलने के लिए उपयोग करता है।

जब हम परमेश्वर की सलाह का अनुसरण करते हैं, तब हम जानते हैं कि उसकी सलाह हमेशा सफल होती है और सदैव अच्छी होती है। उसकी सलाह स्थिर रहती है।

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

***दैनिक जीवन के लिए नीतिवचन* (*भाग*–9)**
ईश्वरीय सलाह पर नीतिवचन
रविवार, 22 मार्च 2026 – उपदेश की रूपरेखा

यह लाइफ़ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के उपदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि प्रत्येक व्यक्ति कैसे वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ़ ग्रुप की बैठक सामान्यतः 1.5 से 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ़ ग्रुप में 12–15 लोग होते हैं।

तैयारी

लाइफ़ ग्रुप लीडर:

लाइफ़ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए आप उपदेश सुन सकते हैं या रविवार के उपदेश नोट्स की समीक्षा कर सकते हैं। कृपया लाइफ़ ग्रुप के दौरान पूरे उपदेश नोट्स पढ़ने के लिए समूह को न कहें। आपको केवल नीचे दिए गए शास्त्र संदर्भों को अलग-अलग व्यक्तियों से पढ़वाना है और फिर दिए गए प्रश्नों के माध्यम से चर्चा, साझा करने और सीखने का समय खोलना है।

ये सभी संसाधन “ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर” मोबाइल ऐप में या हमारी उपदेश वेबसाइट पर ऑनलाइन उपलब्ध हैं। लाइफ़ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत

लाइफ़ ग्रुप बैठक प्रार्थना, आराधना और किसी रोचक गतिविधि के साथ आरम्भ हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें

नीचे सूचीबद्ध एक या अधिक पवित्रशास्त्र के पद पढ़ें।

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें

लाइफ़ ग्रुप चर्चा-आधारित और सहभागिता से भरी बैठक होती है, जिसमें हर किसी को अपनी सीख साझा करने का अवसर मिलता है। कृपया इनमें से कुछ बातों पर मिलकर चर्चा करें और लोगों को अपने विचार साझा करने के लिए समय दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि वह समूह चर्चा के दौरान अपनी व्यक्तिगत सीख के नोट्स बनाए।

1. **ईश्वरीय सलाह प्राप्त करने के महत्व पर चर्चा करें**

(नीतिवचन 11:14; 15:22; 19:20; 20:18 के आधार पर)

2. **लोगों को अच्छी ईश्वरीय सलाह देने के आनंद पर चर्चा करें**

(नीतिवचन 12:20 के आधार पर)

3. **परामर्श के लिए बाइबिल आधारित दृष्टिकोण पर चर्चा करें**

(नीतिवचन 20:5 के अनुसार)

प्रत्येक व्यक्ति कुछ समय (अधिकतम 3 मिनट) लेकर एक या दो मुख्य अंतर्दृष्टियाँ साझा करे और बताए कि वह उन्हें अपनी विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू करेगा/करेगी। सभी को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

संगति (FELLOWSHIP): अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ समय (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपनी चाल से जुड़ी कोई बात, वह शिक्षा जो परमेश्वर उसे सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती साझा करे जिसके लिए वह प्रार्थना चाहता/चाहती है। सभी को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें: प्रार्थना और सेवकाई द्वारा

दो या तीन के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से परमेश्वर का धन्यवाद करें और आज जो सीखा गया उसके अनुसार एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के प्रवाह की अपेक्षा करें—चंगाई, चमत्कार, भविष्यवाणी आदि के लिए।

फिर से एकत्र होकर मिलकर प्रार्थना करें:

1. परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए

2. कलीसिया के रूप में हम पर और हमारे द्वारा हमारे शहर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष देने के लिए परमेश्वर के पवित्र आत्मा के महान उंडेले जाने के लिए। केवल परमेश्वर के आत्मा का महान कार्य ही हमारे शहर और राष्ट्र को बदल सकता है।

3. BUILD TO IMPACT परियोजना के लिए—कि जब हम अपने बाइबल कॉलेज और कलीसिया की सुविधाओं की योजना बनाते और निर्माण करते हैं, तो सभी विवरण भली-भाँति पूरे हों, ताकि हम प्रभु और लोगों की सेवा कर सकें।

समापन

मिलकर परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए बैठक समाप्त करें।